International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

किशोरों के व्यवहार पर सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभावः रोहतक जिले के सन्दर्भ में

Nisha
Research Scholar, department of Sociology, jyoti vidhyapeeth women's University Jaipur
Dr. Khushbu lata
Assistant professor, department of Sociology, jyoti vidhyapeeth women's University Jaipur

शोध सार
किशोरों का व्यवहार केवल जैविक या मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों का परिणाम नहीं होता, बल्कि वह व्यापक रूप से उस सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश से निर्मित होता है जिसमें किशोर का समाजीकरण होता है। रोहतक जिला (हरियाणा) सामाजिक दृष्टि से एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ ग्रामीण परंपराएँ, शहरीकरण, शैक्षिक विस्तार और आधुनिक सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ एक साथ सक्रिय हैं। इस मिश्रित सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना के कारण किशोरों के व्यवहार में विविधता, द्वंद्व और परिवर्तनशीलता स्पष्ट रूप से देखी जाती है। किशोरावस्था में जब व्यक्ति अपनी पहचान, मूल्य और जीवन–दृष्टि को आकार दे रहा होता है, तब समाज और संस्कृति उसके व्यवहार के लिए दिशा–निर्देशक की भूमिका निभाते हैं।[1]

मुख्य शब्दः किशोरावस्था, व्यवहार, सामाजिक प्रभाव, सांस्कृतिक प्रभाव, सामाजीकरण, परंपरा, आधुनिकता, सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना, पारिवारिक मूल्य, सामाजिक आचार–संहिता सामाजिक स्वीकृति, आत्म–अभिव्यक्ति समुदाय।

रोहतक जिले के समाज में परंपरागत सामाजिक मानदंडों का प्रभाव अब भी सशक्त रूप में विद्यमान है। सामाजिक आचार–संहिता यह निर्धारित करती है कि किशोर को किस प्रकार बोलना, पहनना, व्यवहार करना और वरिष्ठों के प्रति प्रतिक्रिया देनी चाहिए। किशोर इन मानदंडों के माध्यम से यह सीखता है कि समाज में स्वीकृति प्राप्त करने के लिए कौन–सा व्यवहार उपयुक्त है। जब किशोर इन अपेक्षाओं के अनुरूप आचरण करता है, तो उसे सामाजिक स्वीकार्यता और सम्मान मिलता है, किंतु जब उसका व्यवहार इन सीमाओं से बाहर जाता है, तो उसे आलोचना या अस्वीकृति का सामना करना पड़ता है। यही प्रक्रिया किशोर के भीतर व्यवहार–नियंत्रण की भावना विकसित करती है, परंतु कई बार यह नियंत्रण उसके लिए मानसिक दबाव का कारण भी बन जाता है।[2] संस्कृति किशोर को केवल परंपराएँ नहीं सिखाती, बल्कि उसे जीवन को देखने का दृष्टिकोण भी प्रदान करती है। रोहतक जिले की सांस्कृतिक संरचना सामूहिकता, पारिवारिक सम्मान, अनुशासन और सामाजिक मर्यादा पर आधारित रही है। किशोर इन सांस्कृतिक मूल्यों के माध्यम से कर्तव्य, सम्मान और उत्तरदायित्व

[1] यादव, आर. के. (2018). *किशोरावस्थाः सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य.* वाराणसीः चौखम्बा प्रकाशन, पृ. 112–135
[2] हर्लॉक, ई. बी. (2014). *विकासात्मक मनोविज्ञान.* नई दिल्लीः टाटा मैकग्रा–हिल, पृ. 245–270

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

की भावना सीखता है। ये मूल्य उसके व्यवहार में संयम, सहनशीलता और सामाजिक संवेदनशीलता को विकसित करते हैं। किंतु आधुनिक समय में जब किशोर वैश्विक और शहरी सांस्कृतिक प्रभावों के संपर्क में आता है, तो वह परंपरागत मूल्यों की पुनर्व्याख्या करने लगता है। इस प्रक्रिया में उसका व्यवहार अधिक प्रयोगशील और आत्म–अभिव्यक्तिपूर्ण हो सकता है।

रोहतक जिले के किशोरों के व्यवहार को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण तत्व परंपरा और आधुनिकता के बीच का द्वंद्व है। किशोर एक ओर पारिवारिक परंपराओं, सामाजिक रीति–रिवाजों और सांस्कृतिक अपेक्षाओं से बंधा होता है, वहीं दूसरी ओर आधुनिक जीवन–शैली, स्वतंत्र विचारधारा और व्यक्तिगत अधिकारों की ओर आकर्षित होता है। यह द्वंद्व उसके व्यवहार में अस्थिरता उत्पन्न कर सकता है। कभी वह पारंपरिक मूल्यों के अनुरूप संयमित आचरण करता है, तो कभी आधुनिक प्रभावों के कारण विद्रोही या स्वतंत्र व्यवहार प्रदर्शित करता है। यह स्थिति किशोर के व्यवहार को एक स्थिर ढाँचे में बंधने से रोकती है और उसे निरंतर परिवर्तनशील बनाती है। किशोरावस्था में सामाजिक स्वीकृति का महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है। रोहतक जिले के किशोर अपने व्यवहार के माध्यम से यह स्थापित करने का प्रयास करते हैं कि वे समाज और समूह में किस स्थान पर खड़े हैं। सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करने की इच्छा किशोर को अपने व्यवहार को सामाजिक अपेक्षाओं के अनुसार ढालने के लिए प्रेरित करती है। वह यह समझने लगता है कि कौन–सा आचरण उसे सम्मान दिलाएगा और कौन–सा उसे आलोचना के दायरे में ला सकता है। इसी प्रक्रिया में किशोर कभी–कभी अपने वास्तविक विचारों और भावनाओं को दबाकर सामाजिक भूमिका निभाने लगता है, जिससे उसके व्यवहार में आंतरिक तनाव और विरोधाभास उत्पन्न हो सकता है।[3]

रोहतक जिले की सामाजिक संरचना जिसमें जातीय, आर्थिक और सांस्कृतिक विविधता शामिल है किशोरों के व्यवहार को अलग–अलग तरीकों से प्रभावित करती है। समुदाय किशोर को यह सिखाता है कि उसे समाज के भीतर किस प्रकार की भूमिका निभानी है। सामाजिक आयोजनों, सामुदायिक गतिविधियों और स्थानीय परंपराओं के माध्यम से किशोर सामूहिक जीवन का अनुभव करता है। यह अनुभव उसके व्यवहार में सहयोग, सहभागिता और सामाजिक जिम्मेदारी को विकसित कर सकता है। किंतु यदि किशोर को समुदाय में भेदभाव, उपेक्षा या असमानता का अनुभव होता है, तो उसका व्यवहार प्रतिरोधी या असंतोषपूर्ण भी हो सकता है। आधुनिक समय में मीडिया किशोरों के सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवहार को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण माध्यम बन चुका है। रोहतक जिले के किशोर भी लोकप्रिय संस्कृति, डिजिटल मीडिया और सांस्कृतिक प्रतीकों के संपर्क में हैं। मीडिया किशोर के व्यवहार, भाषा, पहनावे और जीवन–शैली पर प्रभाव डालता है। यह प्रभाव कभी प्रेरणादायक

[3] वर्मा, एस. (2021). *किशोर मानसिक स्वास्थ्यः चुनौतियाँ एवं समाधान.* जयपुरः रावत पब्लिकेशन्स, पृ. 65–92

हो सकता है, तो कभी भ्रमित करने वाला। किशोर इन प्रतीकों के माध्यम से अपनी पहचान गढ़ने का प्रयास करता है, जिससे उसके व्यवहार में नए प्रयोग और परिवर्तन देखने को मिलते हैं।[4]

समाज किशोर से कुछ निश्चित भूमिकाएँ निभाने की अपेक्षा करता है जैसे जिम्मेदार विद्यार्थी, आज्ञाकारी संतान या सामाजिक मर्यादा का पालन करने वाला सदस्य। इन भूमिकाओं की अपेक्षाएँ किशोर के व्यवहार को दिशा देती हैं। जब किशोर इन अपेक्षाओं को पूरा कर पाता है, तो उसका व्यवहार आत्मविश्वासपूर्ण होता है, किंतु जब वह इन भूमिकाओं के अनुरूप आचरण नहीं कर पाता, तो उसके भीतर तनाव और असंतोष उत्पन्न हो सकता है। यह स्थिति उसके व्यवहार को अस्थिर या विरोधी बना सकती है।[5] इस प्रकार रोहतक जिले के किशोरों के व्यवहार पर सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव बहुआयामी और गहन हैं। समाज और संस्कृति किशोर को व्यवहार की सीमाएँ, मूल्य और पहचान प्रदान करते हैं, परंतु साथ ही वे उसके सामने नई चुनौतियाँ और द्वंद्व भी उत्पन्न करते हैं। किशोरावस्था में इन प्रभावों को समझना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि यही प्रभाव किशोर के व्यवहार, व्यक्तित्व और सामाजिक उत्तरदायित्व को आकार देते हैं। यदि सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण संतुलित, सहायक और संवेदनशील हो, तो किशोर का व्यवहार सकारात्मक दिशा में विकसित होता है और वह समाज का एक जिम्मेदार सदस्य बनकर उभरता है।

व्यवहारगत समस्याओं के निवारण के उपाय

किशोरावस्था की व्यवहारगत समस्याएँ (जैसे आक्रामकता, विद्रोह, चिंता, अवसाद, अनुशासनहीनता, जोखिमपूर्ण प्रवृत्तियाँ) केवल "गलत आदत" या "जिद" नहीं होतीं, बल्कि वे किशोर के विकास, भावनात्मक आवश्यकताओं, सामाजिक अनुभवों और परिवेश के बीच बने असंतुलन का परिणाम होती हैं। इसलिए रोहतक जिले के संदर्भ में इन समस्याओं का निवारण भी केवल दंड, डर या कठोर नियंत्रण से नहीं हो सकता। प्रभावी निवारण का आधार तीन बातों पर टिकता है – समझ, समर्थन और संरचना। रोहतक जैसे ग्रामीण–शहरी संक्रमण वाले जिले में परिवार, विद्यालय, समुदाय और स्थानीय संस्थाएँ मिलकर यदि समन्वित हस्तक्षेप करें, तो किशोरों के व्यवहार को सकारात्मक दिशा में मोड़ा जा सकता है। नीचे निवारण के उपायों को व्यापक, व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्राथमिक स्तरः समस्या की पहचान

निवारण का पहला चरण यह है कि परिवार और विद्यालय व्यवहार में बदलाव को संकेत की तरह देखें, "अपराध" की तरह नहीं। किशोर की चिड़चिड़ाहट, चुप्पापन, टालना, बहस करना या पढ़ाई में गिरावट इन सबको केवल अनुशासनहीनता कहकर खारिज करने के बजाय यह

---

[4] अग्रवाल, पी. (2016). *भारतीय समाज में शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन.* नई दिल्लीः राधा पब्लिकेशन्स, पृ. 150–175

[5] कुमार, ए. (2018). किशोरों में व्यवहारगत समस्याएँ: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. *इंडियन जर्नल ऑफ सोशल रिसर्च, 59(3), पृ. 421–435*

समझना आवश्यक है कि इसके पीछे तनाव, असुरक्षा, तुलना, दबाव या भावनात्मक चोट जैसी स्थितियाँ हो सकती हैं। रोहतक जिले में कई परिवारों में परंपरागत सोच के कारण किशोर की मनोवैज्ञानिक समस्याओं को गंभीरता से नहीं लिया जाता, यही उपेक्षा समस्या को बढ़ा देती है। इसलिए पहचान के स्तर पर संवेदनशीलता विकसित करना और "किशोर क्या महसूस कर रहा है" इस प्रश्न को केंद्र में रखना आवश्यक है।[6]

परिवार–स्तरीय उपायः

रोहतक जिले में परिवार किशोर के व्यवहार का सबसे मजबूत आधार है। परिवार यदि किशोर को भावनात्मक सुरक्षा देता है, तो वह बाहरी दबावों को बेहतर तरीके से संभाल पाता है। सुरक्षा का अर्थ केवल "सुविधाएँ" नहीं, बल्कि यह भावना है कि 'मुझे सुना जाएगा, समझा जाएगा और गलती पर भी मुझे पूरी तरह नकारा नहीं जाएगा।' इसके लिए परिवार में संवाद–परंपरा बनाना जरूरी है जहाँ किशोर को उपदेश नहीं, बातचीत मिले। नियमित बातचीत का आशय "पूछताछ" नहीं, बल्कि उसके अनुभव, मित्र–समूह, विद्यालयी तनाव और पसंद–नापसंद को बिना कटाक्ष के समझना है। माता–पिता यदि हर बात पर तुरंत निर्णय सुनाने लगें, तो किशोर बात छुपाने लगता है, इसके विपरीत जब उसे बोलने का सुरक्षित अवसर मिलता है, तो व्यवहार में खुलापन और संतुलन बढ़ता है।[7]

अनुशासन का पुनर्निर्माणः

किशोरों के व्यवहार को सुधारने के लिए अनुशासन आवश्यक है, पर उसका स्वरूप दंडात्मक नहीं होना चाहिए। रोहतक जिले के अनेक घरों में अनुशासन का अर्थ "डाँट–डपट" या "सख्ती" मान लिया जाता है, जिससे किशोर में विरोध और छल–कपट बढ़ सकता है। बेहतर तरीका यह है कि परिवार स्पष्ट नियम तय करे जैसे पढ़ाई का समय, मोबाइल/सोशल मीडिया की सीमा, बाहर जाने की अनुमति लेकिन इन नियमों के पीछे कारण भी समझाए। अनुशासन का सफल रूप तब बनता है जब नियम न्यायपूर्ण हों, सभी पर लागू हों और कभी–कभी बातचीत के आधार पर संशोधित भी किए जा सकें। इससे किशोर नियमों को दबाव नहीं, जिम्मेदारी की तरह स्वीकार करता है।

विद्यालय–स्तरीय उपायः

विद्यालय किशोर व्यवहार के समाजीकरण का प्रमुख क्षेत्र है। रोहतक जिले में विद्यालयों को "केवल परीक्षा–परिणाम" के ढांचे से बाहर निकलकर समर्थक वातावरण विकसित करना होगा। इसका पहला कदम है कक्षा और विद्यालय परिसर में सम्मान आधारित व्यवहार। जब किशोर शिक्षक से सम्मान और न्याय महसूस करता है, तो वह अनुशासन को चुनौती नहीं देता, बल्कि सीखने में संलग्न होता है। इसके साथ–साथ विद्यालय में काउंसलिंग/मार्गदर्शन

---

[6] मिश्रा, के. (2019). शहरीकरण और किशोर व्यवहारः उत्तर भारत का एक अध्ययन. *सोशल साइंस रिसर्च जर्नल, 6(4), पृ. 211–223*

[7] मिश्रा, एस. एन. (2017). *भारतीय समाज में परिवार और किशोर.* इलाहाबादः लोकभारती प्रकाशन, पृ. 95–118

व्यवस्था (औपचारिक या अनौपचारिक) विकसित करनी चाहिए। कई बार किशोर अपनी चिंता, असफलता या सामाजिक दबाव माता–पिता से साझा नहीं कर पाते, ऐसे में एक प्रशिक्षित शिक्षक/काउंसलर उसे भावनात्मक सहारा दे सकता है।[8] रोहतक जैसे जिले में यह व्यवस्था शहरी विद्यालयों में अपेक्षाकृत संभव है, जबकि ग्रामीण विद्यालयों में "ट्यूटर–मेंटर" मॉडल से भी काम लिया जा सकता है जहाँ कुछ शिक्षक बच्चों के लिए मार्गदर्शक की भूमिका निभाएँ। किशोरों का बड़ा व्यवहार–निर्णय मित्र–समूह के प्रभाव से बनता है। यदि विद्यालय और समुदाय किशोरों को सकारात्मक समूह उपलब्ध कराएँ जैसे खेल, एनसीसी, स्काउट–गाइड, वाद–विवाद, सांस्कृतिक दल, पुस्तक क्लब तो उनकी ऊर्जा रचनात्मक दिशा में जाती है। रोहतक जिले में खेल और सांस्कृतिक गतिविधियाँ प्रभावी साधन हो सकती हैं क्योंकि ये किशोरों को अनुशासन, टीमवर्क और आत्म–नियंत्रण सिखाती हैं। इसके अलावा किशोरों को नेतृत्व के छोटे देना व्यवहार सुधार में मदद करता है, क्योंकि जिम्मेदारी मिलने से आत्मसम्मान बढ़ता है और विरोध की जगह सहभागिता आती है।

निष्कर्ष:

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि रोहतक जिले के किशोरों का व्यवहार केवल जैविक अथवा मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों का परिणाम नहीं है, बल्कि वह गहराई से सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण से निर्मित होता है। परिवार, विद्यालय, समुदाय, परंपराएँ, सामाजिक मानदंड तथा आधुनिकता के प्रभावकृसभी मिलकर किशोरों के व्यक्तित्व और व्यवहार को दिशा प्रदान करते हैं। रोहतक जिले की विशिष्ट सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना, जहाँ एक ओर परंपरागत ग्रामीण मूल्य विद्यमान हैं और दूसरी ओर शहरीकरण व आधुनिक जीवन–शैली का प्रभाव बढ़ रहा है, किशोरों के व्यवहार में द्वंद्व, विविधता और परिवर्तनशीलता उत्पन्न करती है। अध्ययन से यह भी सामने आता है कि सामाजिक स्वीकृति की तीव्र इच्छा किशोरों के व्यवहार को गहराई से प्रभावित करती है। समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप व्यवहार करने पर उन्हें सम्मान और स्वीकार्यता मिलती है, जबकि इससे विचलन की स्थिति में आलोचना, अस्वीकृति और मानसिक तनाव का सामना करना पड़ता है। यही स्थिति कई बार किशोरों में आंतरिक संघर्ष, असंतोष, विद्रोह अथवा व्यवहारगत समस्याओं को जन्म देती है। परंपरा और आधुनिकता के बीच का संघर्ष किशोरों को आत्म–अभिव्यक्ति और सामाजिक अनुशासन के बीच संतुलन बनाने के लिए विवश करता है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि यदि किशोरों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश को संवेदनशील, सहयोगात्मक और संतुलित बनाया जाए, तो उनके व्यवहार का सकारात्मक विकास संभव है। परिवार में संवादपूर्ण वातावरण, विद्यालय में सहयोगी व सम्मानजनक व्यवहार, समुदाय में सहभागिता के अवसर तथा मीडिया के विवेकपूर्ण उपयोग से किशोरों

[8] सक्सेना, आर. (2020). *विद्यालयी वातावरण और किशोर व्यवहार.* नई दिल्ली: एपीएच पब्लिशिंग कॉरपोरेशन, पृ. 75–98

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

को आत्मविश्वासी, जिम्मेदार और सामाजिक रूप से परिपक्व नागरिक बनाया जा सकता है। इस प्रकार, रोहतक जिले के संदर्भ में किशोर व्यवहार को समझने और सुधारने के लिए दंडात्मक दृष्टिकोण के बजाय सामाजिक–सांस्कृतिक समझ, सहानुभूति और संरचनात्मक समर्थन पर आधारित दृष्टिकोण अपनाना अत्यंत आवश्यक है।